अलीगढ़ तो बहाना है, मकसद हिंदू-मुस्लिम को लड़ाना है

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

अलीगढ़ : 2 मई को अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) का माहौल खुशनुमा था। पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी का सम्मान होना था। दोपहर को अचानक एबीवीपी, आरएसएस के 15-20 गुंडे, पिस्तौल हिलाते हुए, बकायदा पुलिस सुरक्षा में, कैम्पस मे प्रवेश करते हैं। भद्दे-भद्दे नारे लगाते हैं। पूर्व उपराष्ट्रपति को गालियां देते हैं। उन्हे मार डालने की धमकी देते हैं।

कैम्पस गेट पर कुछ छात्र और यूनिवर्सिटी के सुरक्षाकर्मी, गुंडो को रोकने की कोशिश करते हैं। उनके साथ ये गुंडे मार-पीट करते हैं। फिर आगे बढ़ते हुए, पूर्व उपराष्ट्रपति सभास्थल की ओर रुख करते हैं। तब तक वह पधारे नही थे।

स्टूडेंट्स भी कम थे। योजनाबद्ध तरीके से संघी गुंडे छात्रों पर हमला करते हैं। एक छात्र नेता समेत कई छात्र घायल हो जाते हैं। तब तक एएमयू के प्रॉक्टर पहुंचते हैं और बाकी स्टूडेंट्स भी आ जाते हैं। जैसा की नियम है, उप महामहिम के सुरक्षकर्मी उनके पहुंचने के पहले हालात का जायजा लेने पहुंचते हैं। संघी गुंडे पूर्व उप महामहिम के सुरक्षा कर्मियों से भिड़ जाते हैं।

कथित विवाद वाली बात, कि मोहम्मद अली जिन्ना की तस्वीर एएमयू यूनियन हॉल में क्यूं लगी है, पर गुंडे कोई बात तक नही करते। उप-महामहिम को गद्दार कहते हैं। उन्हे जान से मारने की धमकी देते हैं। पूर्व उप महामहिम के सुरक्षाकर्मी इस बात पर आपत्ति जताते हैं। संघी गुंडे उनसे भिड़ जाते हैं। हवा में गोलियां चलाते हैं। सुरक्षाकर्मी भी एक हवाई फ़ायर करते हैं। फिर भगदड़ मचती है। संघी गुंडे भागने लगते हैं। पर प्रॉक्टर की टीम कुछ गुंडों को धर दबोचती है।

फिर प्रॉक्टर और छात्र-छात्राओं का हुजूम पुलिस थाने पहुंचता है। पकड़े गये संघी गुंडों को पुलिस के हवाले कर दिया जाता है। इन गुंडों ने देशद्रोह किया था। पुलिस उनको हिरासत मे लेने के बजाय छोड़ देती है!

इस पर छात्रों का गुस्सा फट पड़ता है। विरोध प्रदर्शन शुरू हो जाता है। जिस पुलिस ने देशद्रोह मे शामिल संघी लड़के छोड़ दिये, एएमयू के छात्रों पर लाठी चलाती है। बेरहमी से मारती है, आंसू गैस छोड़ती है। कई लड़कों का सिर फट जाता है। पुलिस गोली भी चलाती है। लड़के घायल होकर गिर जाते हैं। चारों तरफ अफरातफरी मच जाती है।

एएमयू में पूर्व उप महामहिम पर हुआ हमला राष्ट्रद्रोह की श्रेणी मे आता है।

इस मामले की शुरुआत आरएसएस ने की, जब कुछ दिन पहले, संघ ने एएमयू कैम्पस के अन्दर शाखा खोलने की कोशिश की। फिर भाजपा के नेताओं ने एएमयू यूनियन हॉल में मोहम्मद अली जिन्ना की तस्वीर पर सवाल उठाया।

पर अगर आप और हम यह सोच रहे कि संघ को परेशनी जिन्ना से है, तो यह बिल्कुल गलत है। अगर ऐसा होता तो इनको सबसे पहले जिन्ना की मुम्बई वाली हवेली, ब्रिटानिया बिस्कुट, गोएयर, और आईपीएल पंजाब टीम से आपत्ति होती, जो जिन्ना के वंशज भारत में चला रहे हैं। यहां तक की, जिन्ना के वंशज उद्योगपती नुस्ली वाडिया, संघ के प्रमुख नेता ननाजी देशमुख को पैसा देते थे! संघ जिन्ना के वंशजो के पैसों पर फली-फूली है। लेकिन इन्हें इन सबसे परेशानी नहीं, बल्कि आजादी के 20-30 साल पहले से लटकी तस्वीर से है! साफ है कि निशाने पर हामिद अंसारी और एएमयू हैं, जिन्ना नही।

आज का एएमयू , सर सैय्यद अहमद खान द्वारा 1880 मे स्थापित मोहम्मडन एंग्लो ओरियंटल कॉलेज का ही एक्सटेंशन है। आजाद भारत सरकार द्वारा मान्य, एएमयू के 1920 यूर्निवसिटी एक्ट के clause 4 (V) के तहत, 1920 से पहले जिस तरह कॉलेज की बुनावट थी, उन्ही स्टाइल्स और प्रॉपर्टीज को वैसा ही रक्खा जायेगा। जिन्ना एएमयू के फाऊंडर मेम्बर थे। उनकी तस्वीर 1920 के पहले यूनियन हॉल में लगी थी। अब 1920 के एक्ट के अन्तर्गत, तस्वीर से छेड़छाड़ नही किया जा सकता। केंद्र और प्रदेश में भाजपा की सरकार है। जिन्ना की तसवीर हटाने के पहले, उन्हे 1920 एक्ट मे तब्दीली लानी चाहिये।

ऐसा न करके, उपद्रव मचाना,पूर्व उप महामहिम पर हमला बोलकर भारत में संवैधानिक संकट पैदा करना–संघ की देश को कमजोर करने की घिनौनी साजिश है। इस घटना के 12 घन्टे पहले, भाजपा नेता सुब्रमणयम स्वामी का ट्वीट आया था- अलीगढ़ विश्वविद्यालय को सबक कौन सिखायेगा? यह सब पूर्व नियोजित था। स्वामी, इजरायल की गुप्तचर एजन्सी, 'मोसाद' का आदमी है। मोसाद काफी दिनो से उत्तर प्रदेश मे दंगा भड़काने हेतु, सक्रिय है!

एक और चश्मदीद छात्र बताता है कि यूनिवर्सिटी में आतंकवादी हमला हुआ। आतंकियों ने पुलिस तथा आरएएफ की वर्दी पहनी हुई थी। वर्दी में होने की वजह से स्टूडेंट्स को लगा कि वे लोग पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी पर हमला करने आए हिंदू युवा वाहिनी तथा भाजपा के कार्यकर्ताओं की धरपकड़ करेंगे। मौके पर मौजूद लोगों ने बताया कि छात्रों ने पूर्व उपराष्ट्रपति पर सुनियोजित हमले को नाकाम बना दिया। तभी सैकड़ों की तादाद में यूपी पुलिस वहां आ गई। पुलिस की वर्दी देख छात्र उससे अपनी शिकायत दर्ज करवाने के लिए जैसे ही बढ़े, अचानक से उन छात्रों पर हमला हो गया।

छात्रों का कहना है कि यह एक आंतकी वारदात थी जिसे पुलिस की वर्दी में अंजाम दिया गया। यूपी पुलिस भला बेकसूर छात्रों पर क्यों हमला करेगी? वर्दी पहन कर आए आंतकियों की खोजबीन के लिए सघन तलाशी अभियान अभी तक शुरू नहीं हुआ है। ऐसी उम्मीद है कि एसएसपी अलीगढ़ अजय साहनी के नेतृत्व में बहुत जल्द वे आतंकी पकड़े जाएंगे जिन्होंने छात्रों पर हमला किया था। गौरतलब है कि साहनी साहब 29 अप्रैल को ही अलीगढ़एसएसपी का चार्ज लिए हैं और जिन्ना की तस्वीर का भूत भी कमोबेश इतने ही दिन पुराना है। बहरहाल, मुस्लिम यूनिवर्सिटी से जिन्ना की तस्वीर तो हटी नहीं, अब पड़ोसी हाथरस में दीवारों पर पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे और सांप्रदायिक बातें उभर आई हैं। सोचने वाली बात है कि जिन्ना का जिन्न इतने साल बाद अचानक बोतल से बाहर कैसे आ गया? बीजेपी इस बात से मुत्मइन है कि कर्नाटक चुनाव में जिन्ना का नाम लेकर माहौल गरमाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि वहां टीपू सुल्तान पहले से मौजूद हैं और उनके नाम पर तलवारें तानकर काम चलाया जा सकता है। योगी आदित्यनाथ वहां प्रचार करने जाते हैं लेकिन इस पर कुछ नहीं बोलते।

उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य को उनके जिन्ना संबंधी बयान पर कोई चेतावनी भी नहीं दी जाती। लेकिन बीजेपी को मालूम है कि कैराना और बिजनौर में होने वाले उपचुनावों में जिन्ना की तस्वीर के बहाने मचा हंगामा हिंदू-मुसलमान वोटों के बंटवारे में काम आ सकता है। अलीगढ़ से इलाकाई नज़दीकी भी है। इसलिए यह खेल जारी है। और यह देखने के लिए किसी संजय की दिव्यदृष्टि नहीं चाहिए कि हमारे मीडिया का एक बड़ा हिस्सा बीजेपी-आरएसएस की मदद में मुस्तैद है।

एएमयू छात्र संघठन और एएमयू शिक्षक संघ ने शिकायत की थी कि हिंदूवादी संगठनों की कोशिश उपराष्ट्रपति पर हमले की है. लेकिन ज्यादातर मीडिया ने इस शिकायत को अनदेखा कर दिया। सारा ध्यान स्टूडेंट यूनियन की बिल्डिंग में लगी जिन्ना की तस्वीर पर मोड़ दिया गया. इस पूरे विवाद को ऐसा रंग दे दिया गया मानो एएमयू के छात्र जिन्ना की तस्वीर के लिए लड़ाई लड़ रहे थे और हिंदूवादी संगठन जिन्ना का विरोध कर रहे थे.

मीडिया ने हिंदूवादी संगठनों को ऐसे देशभक्त के रूप में प्रचारित किया जो एएमयू के एक भवन से खलनायक जिन्ना की तस्वीर हटवाने के लिए यत्न कर रहे थे। इस विवाद की शुरुआत और जड़ में जिन्ना कहीं था ही नहीं. यह यूनिवर्सिटी परिसर के भीतर सुरक्षा में चूक का मुद्दा था. यह शायद हिंदूवादी संगठनों द्वारा हामिद अंसारी के ऊपर हमले की असफल कोशिश थी, जिसे अब जिन्ना की आड़ में दबाया जा रहा है।

पाकिस्तान का कायदे आजम संघियों का फायदे आजम

अंग्रेजों का भोंपू बन कर सावरकर, जिन्ना के द्विराष्ट्रवाद के साथ 1937 से खड़ा हुआ; क्या जिन्ना की तस्वीर भी सावरकर की तस्वीर के बगल में संसद की शोभा बने?

उपचुनाव जीतने के लिए आजमगढ़ से अलीगढ़ तक भाजपा भड़का रही सांप्रदायिक हिंसा

लखनऊ के रिहाई मंच ने एएमयू प्रकरण पर तीखी टिप्पणी करते हुए कहा कि भाजपा, कैराना और नूरपुर उपचुनाव को जीतने के लिए पूरे सूबे को साम्प्रदायिकता की आग में झोंकने पर उतारू है। मंच ने आरोप लगाया कि आजमगढ़ से लेकर अलीगढ़ तक सुनोयोजित तरीके से तनाव भड़काया जा रहा है। यह सिर्फ संयोग नहीं की अजय साहनी जब आजमगढ़ के पुलिस कप्तान रहते हैं तो फर्जी मुठभेड़, भारत बंद के बाद दलितों, मुसलमानों का उत्पीड़न, पिछले दिनों सरायमीर में हुए तनाव जैसी घटना होती है और उनके अलीगढ़ जाते ही एएमयू में लाठीचार्ज।

रिहाई मंच अध्यक्ष मुहम्मद शुऐब ने कहा कि भाजपा का इतिहास रहा है कि वह दंगों की फसल बोती है और वोट के रूप में काटती है। जिस तरह ठीक कैराना और नूरपुर के उपचुनाव के पहले एएमयू में जिन्ना की तस्वीर को लेकर भाजपा सांसद ने विवाद पैदा किया ठीक इसी तरह 2014 के पहले मुज़फ्फरनगर और बाद में उपचुनाव में लव जिहाद का मामला उछाला गया था।

मंच अध्यक्ष ने कहा कि आजमगढ़ और अलीगढ़ के मसले को प्रशासन तूल देकर भाजपा के पक्ष में माहौल बना रहा है। एएमयू में हिन्दू जागरण मंच के गुंडे 'जय श्रीराम' और 'हिन्दुस्तान में रहना है तो वंदेमातरम् कहना होगा' जैसे नारे लगाते हुए तमंचा लहराते हुए पुलिस के सहयोग से भारत के पूर्व उप राष्ट्रपति के ऊपर हमला करने जा रहे थे, जो योगी की पुलिस को अपराध नहीं लगता और ऐसे गुंडों पर कोई कार्यवाही नहीं होती। जब छात्र कार्यवाही की मांग करते हैं तो उनके ऊपर आंसू गैस के गोले और लाठियां चलाकर लहूलुहान कर दिया जाता है।

ठीक इसी तरह आजमगढ़ के सरायमीर में संघ परिवार से जुड़े अमित साहू ने धार्मिक आपत्तिजनक टिप्पणी की। इस कापी-पेस्ट टिप्पणी पर झाँसी समेत उत्तर प्रदेश में कई जगह पर तत्काल गिरफ्तारियां होने की सूचनाएं हैं पर सरायमीर थानेदार रामनरेश यादव ने न सिर्फ अपराधियों को बचाने की कोशिश की बल्कि कार्यवाही की मांग करने वालों पर ही उल्टा मुकदमा दर्ज कर दिया। इस मुस्लिम विरोधी माहौल बनाने में मौजूदा पुलिस कप्तान अजय साहनी की बड़ी भूमिका रही और अलीगढ़ में जाकर वे यही भूमिका अदा कर रहे हैं। आजमगढ़ में आये नये कप्तान तो आते ही संघ परिवार के इशारे पर सरायमीर थानाध्यक्ष की 'जनहित' में काम करने की सराहना कर रहे हैं। जबकि हिन्दुत्ववादी संगठनों और पुलिस प्रशासन के संगठित तौर पर तोड़-फोड़ करने के वीडियो सामने आये हैं पर उनपर कोई कार्यवाही नहीं हो रही है।

रिहाई मंच प्रवक्ता अनिल यादव ने बताया कि 6 मई को 3.30 बजे कैफ़ी आज़मी एकेडमी निशातगंज,लखनऊ (गुरुद्वारा रोड) में होने वाले सम्मलेन में भारत बंद के दौरान आंदोलन में दमन और उत्पीड़न झेले आंदोलनकारी, सहारनपुर दलित हिंसा के बाद दमन किये गए भीम आर्मी के नेता, रासुका के तहत निरूद्ध किये गए दलित-मुस्लिम युवाओं व फर्जी मुठभेड़ में मारे गए युवाओं के परिजन समेत प्रदेश भर में सड़कों पर संघर्षरत नेता मौजूद होंगे।

भारतीय राजनीति के टॉम एंड जेरी हैं नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी

त्रिभुवन

अगले साल होने वाले आम चुनाव नजदीक आ रहे हैं और देश का राजनीतिक परिदृश्य बहुत ही रोचक हो गया है। ख़ासकर नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी ने इस परिदृश्य में कई रंग भर दिए हैं। मैं प्रसिद्ध टीवी शो "टॉम ऐंड जैरी" का बहुत शौकीन रहा हूं और मेरे बच्चों ने यह शो मुझे बहुत ही दिखाया है। आज ऐसा लगता है कि टॉम सिर्फ़ टॉम नहीं रह गया है। उसने ज़ेरी की तेजतर्रार बुद्धि का भी हरण कर लिया है और ज़ेरी बेचारा टॉम की तरह बुद्धू बनकर रह गया है। वह बार-बार कोशिशें करता है, लेकिन टॉम कितनी चतुराई से अपनी गलतियों पर पर्दा डालकर ज़ेरी को छका देता है। लगता है, भारतीय राजनीति के टॉम और ज़ेरी को देखकर "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" जैसे महान इंजीनियर भी हँस रहे हैं!

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या हँस रहे हैं; क्योंकि देश के प्रतिपक्ष का सबसे बड़ा नेता और जो युवा और सुशिक्षित भी है, उनका नाम ठीक से उच्चारित नहीं कर सकता। एक भाषण में पांच बार कोशिश करके भी। देश के प्रधानमंत्री इस युवा नेता को यह चुनौती दे रहे हैं कि वह देश के उस प्रतिष्ठित इंजीनियर का नाम बोलकर दिखा दें, जिसे उनके पिता के नाना की सरकार ने 1955 में भारत रत्न दिया था।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या हँस रहे हैं; क्योंकि 133 साल पुरानी एक पार्टी का 48 वर्षीय युवा नेता एक नाम भी ठीक से नहीं ले सकता और जो उसका उपहास उड़ा रहा है और जिसे अपने उच्चारण का बहुत भरोसा है, वह हर शब्द ही अनुनासिक बनाकर बोलता है। वह "मित्रो" को अपने हर भाषण में "मित्रों" कहता है और संबोधन अभिव्यक्ति का नियम भूल जाता है, जो कि इस देश के हर सरकारी स्कूल की तीसरी कक्षा से पढ़ाई जाती है। हालांकि बहुत से लोग यहां भी "मित्रो" और "मित्रों" को लेकर लंबी बहस कर सकते हैं, क्योंकि हमारे यहां उच्चारण कोई गंभीर विषय ही नहीं है।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या हँस रहे हैं; क्योंकि एक आदमी जो बिना देखे पढ़ने का दावा करता है, वह मिसिड सिरीसेना के Mrs हिन्जों को मिसिज के बजाय पूरे अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने एमआरएस पड़ता है और अपनी गलती भी नहीं सुधारता। इसे कहते हैं आत्मविश्वास। वह तक्षशिला को बड़े गर्व से बिहार में बता देते हैं और झेंपते भी नहीं हैं। वे चंद्रगुप्त मौर्य को गुप्तकाल का योद्धा घोषित करते हैं और तालियां बटोरते हैं। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या हँस रहे हैं; क्योंकि हमारे प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि 1947 में एक "रुपीया" एक डॉलर के बराबर हुआ करता था, जबकि दुनिया जानती है कि उन दिनों डॉलर नहीं, पाउंड अंतरराष्ट्रीय मुद्रा थी और एक रुपया करीब 30 सेंट के बराबर हुआ करता था।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या हँस रहे हैं; क्योंकि देश का एक बहुत बड़ा नेता बता रहा है कि श्यामाप्रसाद मुखर्जी गुजराती थे। और तो और मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या हँस रहे हैं; क्योंकि बिना का?? पर लिखा हुआ देखे निधड़क बोल रहे नेताजी इतिहास की यादें ताजा करते हुए बता रहे हैं कि बिहार के बहादुर लोगों ने सिकंदर के दांत खट्टे कर दिए थे। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या अपना सिर खुजा रहे हैं कि आखिर उनके समय तो इतिहास में यही पढ़ाया जाता था कि सिकंदर को पौरस ने झेलम के पास ही रोक दिया था और वह वहीं से वापस लौट गया था। उसे तो गंगा पार करने की भी नौबत नहीं आई। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या हँस रहे हैं; क्योंकि मोहनलाल गांधी और लाल दरवाजा तो सामान्य बातें हैं, लेकिन अगर 1885 में बने किसी दल को 1857 में हुई क्रांति में गलत भूमिका के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए तो शायद इस बात पर ठहाका भी लगाया जा सकता है।

लेकिन मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या जोर-जोर से हँस रहे हैं; क्योंकि इतनी चूकें करने के बाद भी एक नेता का विश्वास नहीं डिगता और वह मैदान में पूरे आत्मविश्वास से डटा रहता है और दूसरा अकबर रोड के अपने शयनकक्ष में हिन्दी के कुछ उद्घोषकों के सामने पहली कक्षा के किसी बच्चे की तरह "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" रट रहा है, क्योंकि उसे गली के सबसे बदमाश बच्चे ने एक उच्चारण भर की चुनौती देकर मॉनिटर बनने से मानो रोक दिया है!

आप कल्पना कर सकते हैं कि राहुल गांधी की रातें इन दिनों कैसे गुजर रही होंगी, "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" का समवेत पाठ करते हुए! कमरे में घूम-घूमकर! मैं कल्पना कर सकता हूं, क्योंकि तीसरी कक्षा में "मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या" का पाठ मेरी किताब में भी था और मेरे लिए इसे उच्चारित करना एक टेढ़ी खीर था।